वाल्मीकि रामायण पर आधारित 'श्रीराम–कथा ज्ञान–यज्ञ'

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 04 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वय महाराज जी की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि के साथ आज अयोध्या से पधारे अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरू रामानन्दाचार्य **स्वामी रामानन्द दास जी महाराज** को वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा'** दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में श्रीराम कथा की अमृतवर्षा प्रारम्भ हो गई। व्यासपीठ से कथाव्यास ने अयोध्या की महिमा के साथ कथा को विस्तार दिया। उन्होंने कहा कि अयोध्या को मनु महाराज ने बसाया है। जिस प्रकार काशी भगवान शिव के त्रिशुल पर टिकी है उसी प्रकार अयोध्याधाम भगवान विष्णु के चक्र पर स्थापित है। अयोध्या का अर्थ ही है की जो दैहिक–दैविक अर्थात् काम–क्रोध–लोभ–मोह–ईर्ष्या आदि शत्रुओं द्वारा कभी जीता न जा सका हो। इसी अयोध्याधाम में महाराज दशरथ का धर्मपूर्वक शासन था। अयोध्या के इक्ष्वाकु वंशी सभी शासक धर्मात्मा थे, राष्ट्र भक्त थे और संस्कृति प्रेमी थे। परिणामतः अयोध्या के चारो तरफ 84 कोस के क्षेत्र में कभी किसी प्रकार का कोई संकट नहीं था। अयोध्या के शासक इतने भगवत् भक्त एवं धर्मप्रेमी थे, इतने प्रतापी तथा शक्तिशाली थे कि देवलोक में भी आया–जाया करते थे। देवराज इन्द्र स्वयं अपना आधा सिंहासन खाली कर उन्हें अपने पास बैठाया करते थे। अयोध्या नरेश राजा दशरथ को पुत्र न होने से दुःखी थे। वंश न चलने के तीन कारणों पर कथा केन्द्रित होते हुए वर्तमान युग के आचार–व्यवहार पर टिक जाती है। कथावाचक कहते है कि पितृदोष, ग्रहदोष एंव शारीरिक अक्षमता से वंश नही चलते। एक पुत्र यदि योग्य हो जाय तो 21 पीढ़ी का उद्धार करता है। शास्त्र कहते है पुत्र भक्त हो तो 21 पीढ़ी और दाता हो तो 7 पीढ़ी को तार देता है। यदि पुत्र शूरवीर हुआ और मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हुआ तो उसे सीधे मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह सूर्य–चन्द्र का भेदन करता हुआ भगवद्धाम को जाता है। भारतमाता की सुरक्षा में भारत के वीर शहीद हो रहे सेनानियों के धर्म से बड़ा धर्म कोई नहीं। आगे कथा को विस्तार देते हुए कथा व्यास ने भगवान श्रीराम की बाल लीलाओं का रसपान प्रारम्भ किया और भक्तिरस की ओजस्व धारा में भक्त गोते लगाते, डूबते–उतरते श्रीराम कथा का रसपान करते रहें। कथाव्यास ने कहा कि महाराजा दशरथ के घर चार पुत्रों का जन्म नही निराकार ब्रह्म का साक्षात् सगुण अवतार हुआ था किन्तु भगवान ने अपनी बाल लीलाओं के माया–जाल में समस्त अयोध्यावासियों को फॅसा रखा था। अयोध्या में आठो सिद्धियॉ, नव निधियों ने अपना डेरा डाल रखा था। भगवान् भाष्कर ने अपने सारथी अरूण को रथ रोक देने का आदेश देकर भगवान की बाल लीला का आनन्द लेने लगे और भगवान बाल रूप में पालना में झूलते हुए इस सबका आनन्द ले रहे है। महाराजा दशरथ के ऑगन में पालना में पड़े भगवान को झुला झुलाने के लिये अष्ट सिद्धियॉ और नवनिधियॉ भी जूझ रही है। बालरूप भगवान की भक्ति में देवता भी मगन थे। जिनका नाम सुनना ही शुभ है उनका साक्षात दर्शन का फल कौन प्राप्त करना नही चाहेगा? इसी प्रसंग के साथ कथा भक्ति का रहस्य खोलने लगती है। कथाव्यास कहते है भगवान नारद ने नारदभक्ति सूत्रम् में भक्ति के दो मंत्र कथाश्रवण एवं संकीर्तन बताए हैं। भक्ति का यही सर्वाधिक आसान मार्ग है। भक्ति के इसी मार्ग पर भगवान श्रीराम के दर्शन को लालायित अयोध्या के लिये चल पड़ते है। भगवान शिव बूढ़े ब्राह्मण के वेश में और काकभुसुण्डि उनके शिष्य रूप धारण कर अयोध्या पहॅुचते है। इन्द्र, इन्द्राणि, आठो दिग्पाल सहित तीनों लोको के

देवता भी अयोध्या में डेरा डाले हैं। कथा अयोध्या महिमा पर एकबार पुनः केन्द्रित हो जाती है। कथा व्यास सभी का आह्वान करते है कि आप आकर अयोध्या देखें।

श्रीराम कथा में रूप बदल भगवान शिव और काकभुसुण्डि के बाल रूप श्रीराम के दर्शन पर कथा केन्द्रित हो जाती है। भीड़ में जब शिव–काकभुसुण्डि जब दर्शन नहीं कर पाते तो भीड़ छटने की प्रतीक्षा में वे अयोध्या की पंचकोसी परिक्रमा पर चल पड़ते है। भगवान शिव–काकभुसुण्डि को बालरूप भगवान के दर्शन के लिये भॉति–भॉति के यत्न करने पड़े। भक्ति ऐसे ही यत्नों का परिणाय होती है। भक्ति सुविधा और भोग से नही तप और योग से प्राप्त होती है। भक्ति समर्पण का नाम है।

कथा करवट लेती है और शैव–वैष्णव सम्प्रदायों की एकता की ओर मुड़ जाती है। शैव मत के सर्वश्रेष्ठ देवता भगवान शिव जहॉ आतुर है तो वहीं बालरूप भगवान श्रीराम भगवान शिव के दर्शन को व्याकुल हो उठते है। दोनों एक दूसरे का दर्शन चाहते है। अयोध्या में श्रीराम ही नहीं भगवान शिव की भी उतनी ही प्रतिष्ठा है। शैव–वैष्णव एकता के बहाने सामाजिक–धार्मिक एकता का संदेश देती हुई तथा यजमान श्री ईश्वर मिश्र, श्री सीताराम जायसवाल, श्री जवाहरलाल कसौधन, श्री अवधेश सिंह, श्री पुष्पदन्त जैन, श्री नारायण अजीत सरिया, श्री अशोक जालान, श्री गंगा राय, श्री चन्द्र बंसल, श्री अरूण कुमार अग्रवाल उर्फ लाला बाबू, श्री बृजेश यादव, श्री महेन्द्र पाल सिंह, श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, श्री अतुल सर्राफ, श्री विकास जालान, श्री संतोष कुमार अग्रवाल उर्फ शशि जी, श्री विनोद कुमार राना, श्री अभिषेक सिंह, श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री जितेन्द्र बहादुर चन्द, श्री जितेन्द्र बहादुर सिंह, श्री प्रदीप जोशी, श्री अजय सिंह, श्री संजय कुमार गुप्ता, श्री कृष्ण कुमार गुप्ता आदि थे। कथा का संचालन संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ0 अरविन्द्र कुमार चतुर्वेदी ने किया।